shardhanjali1:arunjaity.qxd 9/26/2010 8:15 PM Page 70

नाना, तुझे प्रणाम

रामेश्वर ठाकुर

राजभवन
भोपाल-462 052

27 फरवरी 2010

प्रिय श्री भरत पाठक जी,

देश के सुप्रसिद्ध महान, विचारक, समाजसेवी, शिक्षाविद, चिंतक एवं कर्मयोगी श्री नानाजी देशमुख के निधन से मुझे गहन दुःख हुआ है। देश के प्रथम ग्रामीण विश्वविद्यालय की मध्य प्रदेश में स्थापना में उनकी सक्रिय भूमिका के लिए वे सदैव स्मरणीय रहेंगे।

श्री नानाजी देशमुख सच्चे अर्थों में ग्रामीण विकास, नैतिक शिक्षा और भारतीय परंपराओं के संवाहक थे। उन्होंने सदैव निःस्वार्थ रहकर देश, समाज तथा मानवता की सेवा के लिए कार्य किया। श्री नानाजी देशमुख के निधन से देश को अपूरणीय क्षति हुई है।

मैं, श्री नानाजी देशमुख की दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ और शोक संतप्त स्वजनों के लिए गहन संवेदना व्यक्त करता हूँ।

भवदीय,

(रामेश्वर ठाकुर)

श्री भरत पाठक
सियारामकुटीर, चित्रकूट,
जिला सतना (म.प्र.)

आज का दिन हम सभी के लिए वेदनादायी रहा। 93 वर्ष पूर्व एक दिव्य आत्मा इस भूमि पर अवतरित हुई। देह धारण कर हमें सान्निध्य में रहने का अवसर प्रदान किया और अपने ईश्वर प्रदत्त दायित्व का निर्वाह करते हुए शांत मन से पुनः अपने मूल स्थान की ओर प्रस्थान कर गयी।

स्वर्गीय नानाजी "आदर्श जीवन" के कई मापदण्ड हमारे सम्मुख प्रस्तुत कर गए। राजनीति में रहकर उसे सत्ता तक पहुंचने की सीढ़ी न समझते हुए वास्तव में समाजसेवा का साधन माना।

सामाजिक पुनर्रचना का सफल प्रयोग हो सकता है, यह विश्वास सामाजिक क्षेत्र में कार्य करने वाले कार्यकर्ताओं को होना चाहिए, इस दृष्टि से मार्ग प्रशस्त बनाकर गए। समाज के प्रति आस्था उनके अंतःकरण की पारदर्शिता दर्शाती है, तो यह समाज आत्मगौरवयुक्त, स्वावलंबी, सुखी-सम्पन्न जीवन जीने वाला बनें, यही उनकी आकांक्षा थी।

सामाजिक कार्यकर्ताओं की मानसिकता, प्रयोगशीलता, कर्मशीलता एवं विजिगीषुवृत्ति कैसी हो, इसका उदाहरण स्वयं के जीवन से प्रस्तुत कर गए।

निरंतर कर्मशील बने रहेंगे यही उनके जीवन का संदेश है। उनकी पावन स्मृति को नमन! ईश्वर उन्हें अपने चरणों में पुनः स्थान प्रदान करें, यही प्रार्थना।

- भैयाजी जोशी, सरकार्यवाह, रा.स्व.संघ